अनिर्वचनीयाद्वैतवाद तुलसी के सन्दर्भ में

डॉ0 देवेशचन्द्र दुबे*

जगद्गुरु तुलसीदास जी महर्षि वाल्मीकि के अवतार हैं यह चर्चा भविष्य पुराण में है–

'वाल्मीकि तुलसी भये तुलसी राम प्रसाद'[1]।

तुलसी का प्रारम्भिक नाम रामबोला था। हॉथरस के समीप गंगा तट पर सोरो शूकर वाराह क्षेत्र में पहुचने पर स्वामी श्री नरहरिदास को देख प्रसन्न हुए। पंडित रामबोला का नाम स्वामी नरहरिदास ने तुलसीदास रख दिया और प्रभु राम की प्रेरणा से महन्ती छोड़ जगत् कल्याण के लिए निकल पड़े। स्वामी नरहरिदास के बड़े शिष्य केवल रामकूबाचार्य जी थे। और इनसे छोटे गोस्वामी तुलसीदास जी थे।

'द्वितीये नरहरि दास के भये जो तुलसीदास।
रामायण शुचि ग्रन्थ रच जग में कियों प्रकाश'।।[2]

गोरखपुर वालों ने लिखा है कि स्वामी नरहरिदासजी जगद्गुरु अनन्ताचार्यजी के शिष्य थे, किन्तु यह कथन रामानन्द सम्प्रदाय को न जानने वालों का है, और नितान्त गलत है।

वस्तुतः गुरु परम्परा इस प्रकार है–

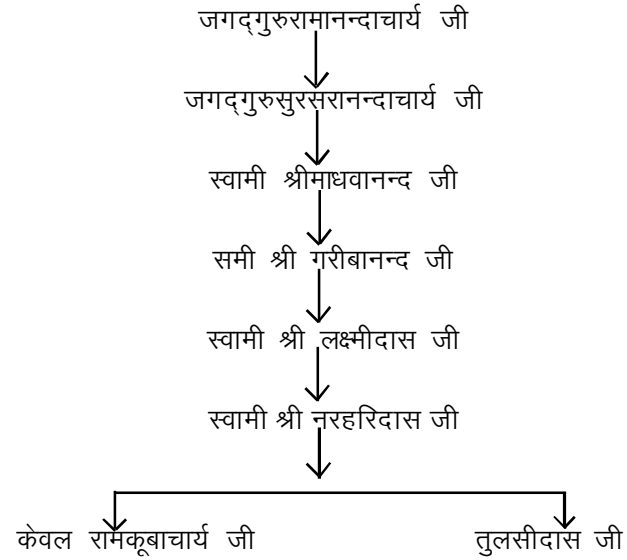

प्रवक्ता – दर्शनशास्त्र सुमित्रा महाविद्यालय सेरवा जौनपुर

चूँकि रामानन्द सम्प्रदाय श्री सीतारामजी का उपासकहै एवं षडक्षरमंत्रराज (राम रामाय नमः) के जप से सायुज्य मुक्ति होती है, में विश्वास करता है। तुलसी भी इन्हीं अवधारणाओं में रचे बसे थे। सभी इतिहासयज्ञों की मान्यता है कि जगद्गुरु तुलसीदासजी श्री अनन्ताचार्य्रजी के प्रशिष्य जगद्गुरु नरहर्यानन्द जी के शिष्य थे[1]। यद्यपि श्री रामचरित मानस के अतिरिक्त जगद्गुरु तुलसीदास जी के ढेर सारे ग्रन्थ ऐसे हैं जिसमें निर्गुण निराकार अनिर्वचनीय परात्पर ब्रह्म के रुप में भगवान् श्रीराम का उल्लेख हुआ है, परन्तु जन–जन में व्याप्त एवं लोकप्रिय श्री रामचरितमानस में शोधार्थी भगवान् श्रीराम की अनिर्वचनीयता ढूढ़ने एवं सिद्ध करने का प्रयास करेगा। श्री रामचरितमानस एक विश्व प्रतिष्ठित महाकाव्य है, जो भारतीय जनमानस में प्रमाण स्वरुप व्याप्त है। वर्तमान में भी यह काव्य जन–जन में उत्साह संचार की अविरल अक्षुण्ण गंगधार बहा रहा है। श्री रामचरितमानस के आरम्भिक बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड पर्यन्त जितने कथा प्रसंग है प्रभु श्रीराम की अनिर्वचनीयता को (अकथनीयता) को प्रमाणित करते है। ऐसे तथ्यों का अन्वेषण ही सम्प्रति परमलक्ष्य होगा, साथ में प्रभु श्रीराम की अनिर्वचनीयता (अकथनीयता) प्रस्तुत करने वाले तथ्य भी होंगे। अब हम क्रमशः बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड पर्यन्त अन्वेषण प्रभुराम की कृपा से आरम्भ करते हैं।

1. जगद्गुरु श्री त्रिदंडमाला या नवम् पुष्प पृ0 13/14/15

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादि देवासुरा,
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां,
वन्देअहं तमशेष कारण परं रामाख्यमीशं हरिम्।।[3]

अर्थात् जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता असुर है, जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प की भांति यह सारा दृश्य जगत् सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छावालों के लिए एक मात्र नौका है, उन समस्त कारणों से पर (सब कारणों के कारण और सबसे श्रेष्ठ) राम कहाने वाले भगवान श्री हरि की मैं वन्दना करता हूँ। इस वन्दना में भी राम की अकथनीयता स्पष्ट है।

'सारद शेष महेश विधि आगम निगम पुराण।
नेति–नेति कहि जासु गुन करहि निरन्तर गान्'[4]।।

अर्थात् सरस्वती जी, शेषजी, शिवजी, ब्रह्माजी, वेद और पुराण, ये सब 'नेति–नेति' कहकर (पार नहीं पाकर 'ऐसा नहीं', 'ऐसा नहीं' कहते हुए) सदा जिनका गुणमान करते है। 'नेति–नेति' अनिर्वचनीयता नहीं तो और क्या है?

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई।
तदपि कहे बिनु रहा न कोई।।[5]

अर्थात्, यद्यपि प्रभु श्रीराम की प्रभुता को ऐसी ही (अर्निवचनीय ही) जानते हैं, तथापि कहे बिना किसी से रहा नहीं गया।

एक अनीह अरुप अनामा ।
अज सच्चिदानन्द पर धामा।।
व्यापक विश्वरुप भगवाना।
तेहि धरि देह चरित कृत नाना।।

अर्थात् जो परमेश्वर एक है, जिनकी कोई इच्छा नहीं, जिनका कोई नाम रुप नहीं, जो अजन्मा, सच्चिदानन्द और परधाम हैं और जो सब में व्यापक एवं विश्वरुप हैं उन्हीं भगवान् ने दिव्य रुप धारण करके नाना प्रकार की लीला की है। यह लीला केवल भक्तों के लिये है–

'से केवल भक्तन हित लागी।'

अनिर्वचनीयता एवं अकथनीयता को बताते हैं–

'तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा।'

अर्थात् उसी बल से महिमा का यथार्थ वर्णन नहीं, परन्तु महान फल देने वाला भजन समझकर भगवत् कृपा के बल पर 'कहिहउँ नाइ राम पद माथा, से भी अनिर्वचनीयता सिद्ध है। इस प्रकार लंकाकाण्ड में प्रभु श्रीराम की अनिर्वचीनयता सिद्ध होती है।

भाटों के रुप में चारो वेद स्तुति करते हुए कहते हैं –

'जय सगुन निर्गुन रुप अनूप भूप सिरोमने।'

फिर कहते हैं–

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनु भवगम्य मन पर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुन जस नित गावही।।

शिवजी कहते हैं हे उमा–

ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार।
सोई सच्चिदानन्द घन कर नर चरित उदार।।25।।[6]

अर्थात् जो ज्ञान वाणी और इन्द्रियों से परे हैं, अजन्मा हैं तथा मन और गुणों के परे हैं वही सच्चिदानन्द घन भगवान् श्रेष्ठ नर लीला करते है।

सनकादि मुनियों ने भी प्रभु श्रीराम की अनिर्वचनीयता का वर्णन किया है यथा–

'जय निर्गुन जय जय गुन सागर'
'अनुपम अज अनादि सोभाकर'
'नाम अनेक अनाम निरंजन '

शंकर कहते हैं हे गिरिजे –

'राम चरित सत् कोटि अपारा।
श्रुति सारदा न बरनै पारा।।'

अर्थात् प्रभु श्रीराम जी के सौ करोड़ चरित्र अपार हैं। श्रुति और सारदा भी उसका वर्णन नहीं कर सकते।

राम अनंत अनंत गुनानी।
जन्म कर्म अनन्त नामानी।।
जल सीकर महि रज गनि जाहीं।
रघुपति चरित न बरनि सिराही।।

अर्थात् श्रीराम जी अनन्त हैं, उनके गुण अनन्त हैं, जन्म कर्म नाम भी अनन्त हैं। जल की बूँदें और पृथ्वी के रज कण चाहे गिने जा सकते हो, पर श्रीराम के चरित्र का वर्णन करने से नहीं चुकते है।

उपर्युक्त वर्णन से भी अनिर्वचनीय राम की पुष्टि होती है।

काकभुशुण्डि जी प्रभु श्रीराम को–

अगुन अभद्र गिरा गोतीता ।
सबदरसी अनवद्य अजीता।।
निर्भय निराकार निरमोहा।
नित्य निरंजन सुख संदेहा।।

कह कर व्यक्त करते हैं।

काकभुशुण्डिजी गरुण जी से कहते हैं–

निर्गुन रुप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ।
सुगमअगम नानाचरित सुनिमुनि मनभ्रमहोई।।73ख।।[7]

जब काकभुशुण्डि जी प्रभु के मुख में चले जाते हैं, उस समय के अनिर्वचनीय स्थिति है–

जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ।
सो सब अद्भुत देखेउँ बरनि कवनि विधि जाइ ।।80क।।[8]

प्रभु श्रीराम काकभुशुण्डि जी को वरदान देते हुए कहते हैं–

माया सम्भव भ्रम सब अब न व्यापिहहिं तोहिं।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि।। 85क।।[9]

काकभुशुण्डि जी कहते हैं–

निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं।
निगम सेष सिव पार न पावहिं।।

लोमश मुनि निर्गुण ब्रह्म का वर्णन करते हैं–

लागे करन ब्रह्म उपदेसा।
अज अद्वैत अगुन हृदयेसा।।
अकल अनीह अनाम अरुपा।
अनुभव गम्य अखण्ड अनूपा।।
मन गोतीत अमल अविनासी।
निर्विकार निरवधि सुखरासी।।
सो तैं ताहि तोहि नहिं भेंदा ,
वारि बीच इव गावहिं वेदा।।

वेद ऐसा गाते हैं कि 'वही तू है' (तत्वमसि), जल और जल की लहर की भॉति उसमें और तुझमें कोई भेद नहीं है।

सुमिरि राम के गुन गन नाना।
पुनि पुनि हरष भुशुण्डि सुजाना।।
महिमा निगम नेति करि गाइ।
अतुलित बल प्रताप प्रभुताइ।।

यहॉ भी प्रभु श्रीराम की अनिर्वचनीयता सिद्ध होती है। इस प्रकार उत्तरकाण्ड में प्रभु श्रीराम की अनिर्वचनीयता सिद्ध होती है।

अतः भलीभॉति यह सिद्ध होता है कि तुलसीदास जी ने प्रभु श्रीराम को अनिर्वचनीय (अकथनीय) ही मानते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. भक्तमाल
2. वहीं
3. जगद्गुरु श्री त्रिदंडमाला या नवम् पुष्प पृ0 13/14/15
4. बालकाण्ड श्लोक 6
5. बालकाण्ड दोहा सं0 2
6. पृ0 18 श्री रामचरितमानस
7. पृ0 942 श्री रामचरितमानस
8. पृ0 959/1001/977 श्री रामचरितमानस
9. पृ0 942/1001 श्री रामचरितमानस